❋ 15 जून 2014 (24-1-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] जैसे धरनी में पहले हल चलाते हैं ना और हल चलाते हुए बीज डाला जाता है ऐसे अपने भविष्य राजधानी में या अपनी आदि धरनी में हलचल रूपी हल चला.... कोई ताकत है, कोई शक्ति है, साधारण शक्तियाँ नहीं है, हलचल के साथ यह बीज डाला है। सम्मुख न देखते हुए भी चारों ओर यह धूम मचाई है कि यह कौन है और क्या है? गवर्मेण्ट के कानों तक यह आवाज पहुंची है। अभी इस बीज को वाणी द्वारा और याद की शक्ति द्वारा फलीभूत करना है।

2] जैसे आजकल की दुनिया में अल्पकाल की पोज़ीशन वाली आत्मायें अपने पोज़ीशन की स्मृति में रहने कारण दिन-रात स्वत: ही उसी नशे में रहती हैं। वैसे बाप द्वारा मिली हुई पोज़ीशन को स्मृति में रखना सहज और स्वत: है। जैसी पोज़ीशन है वैसा ही कर्म, जैसा नाम वैसा ही श्रेष्ठ कर्म भी है इसलिए वर्तमान समय सहजयोगी के साथ कर्मयोगी भी कहलायेंगे।

3] सिर्फ बाप को याद करने का साधन ही बहुत बड़ा है। बाबा कहना और खुशी प्राप्त होना। ऐसा साधन सदा युज़ करते रहो। बाबा शब्द याद करना अर्थात् स्विच ऑफ होना। जैसे स्विच ऑन करने से सेकेण्ड में अन्धकार भाग जाता है। ऐसे ही बाबा कहना अर्थात् अन्धकार या दु:ख-अशान्ति, उलझन, उदासी, टेन्शन सबकी सेकेण्ड में समाप्ति हो जाती है, ऐसा मन्त्र बाप ने दिया है। एक शब्द का तो मन्त्र है, सिर्फ बाबा। कैसा भी समय हो यह मन्त्र एक सेकेण्ड में पार कर लेने वाला है। सिर्फ इस मन्त्र को विधिपूर्वक समय पर कार्य में लगाओ। यह एक शब्द का मन्त्र वन्डरफुल जादू करने वाला है। इस एक शब्द के मन्त्र द्वारा जो चाहो वह ले सकते हो। चाहे सुख-शान्ति, चाहे शक्ति, आनन्द जो चाहो सब प्राप्ति कराने वाला मन्त्र है इसलिए जादू-मन्त्र कहते हैं। बाप तो सदा यही बच्चों के प्रति कामना करते हैं कि बाप समान बेहद के सेवाधारी बनना है।

4] जो प्राप्ति स्वरूप सम्पन्न आत्मायें हैं उन्हें कभी भी किसी भी बात में प्रश्न नहीं होगा। उसके चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनैलिटी दिखाई देगी, इसको ही सन्तुष्टता कहते हैं। प्रसन्नता अगर कम होती है तो उसका कारण है प्राप्ति कम और प्राप्ति कम का कारण है कोई न कोई इच्छा। बहुत सूक्ष्म इच्छायें अप्राप्ति के तरफ खींच लेती हैं, इसलिए अल्पकाल की इच्छाओं को छोड़ प्राप्ति स्वरूप बनो तो सदा प्रसन्नचित रहेंगे।

❋ योग-

1] जब साइन्स का यन्त्र गर्मी का या सर्दी का वायब्रेशन वायुमण्डल बना सकते हैं तो मास्टर सर्वशक्तिमान अपने साइलेन्स अर्थात् याद की शक्ति से, अपने लगन की स्थिति द्वारा जा वायुमण्डल अथवा वायब्रेशन फैलाना चाहें वह सब बना सकते हैं। ऐसी प्रैक्टिस करो।

2] ऐसे आजकल के मनुष्य अपनी शक्ति से अनुभव नहीं कर सकेंगे, लेकिन आप सबको अपनी प्राप्ति के आधार से, **याद के आधार से** उनको अनुभवी बनाना पड़ेगा। यह है वास्तविक **सहज राजयोग** या **कर्मयोग** की परिभाषा। स्वयं प्रति शान्ति या शक्ति का अनुभव किया यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन अपने **याद की शक्ति** द्वारा अब विश्व में वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाओ तब कहेंगे नम्बरवार **सहज राजयोगी**। सिर्फ स्वयं सन्तुष्ट न रह जाओ। सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना है। यह है योगी का कर्तव्य।

❋ 15 जून 2014 (24-1-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ धारणा-

1] विदेशी आत्माओं को यह भी अनुभव करना बहुत जरूरी है कि जैसा मौसम वैसा स्वयं को चला सकें।

2] जैसे हद की आत्माओं से स्नेह रखने वाली आत्मा का उनके चेहरे और झलक से दिखाई देता है कि कोई से स्नेह में लवलीन है। ऐसे अपने आप से पूछो कि हर कर्म बाप के साथ स्नेही आत्मा का अनुभव कराता है। इसको ही कहा जाता है कर्मयोगी। कर्मयोगी की या सहज राजयोगी की परिभाषा बड़ी गुह्य है।

3] वह सब हैं हद की ज़िम्मेवारियाँ लेकिन बाप की ज़िम्मेवारी है बेहद की। तो बेहद की शक्ति देनी पड़ती है ना। तो बाप की यह शुभ भावना भी पूरी करनी ही है। अब राजयोगी बनना है। राजयोगी राज-राजेश्वर बनेंगे। तो पहली स्टेज है राजयोगी की। राजयोगी बनना कठिन नहीं है। घरबार छोड़ने वाला योगी बनना कठिन होता है।

4] परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो माया की आकर्षण समाप्त हो जायेगी।

❋ सेवा-

1] सोते हुए भी सेवा हो। सोते हुए भी कोई देखे तो आपके चेहरे से शान्ति, आनन्द के वायब्रेशन अनुभव करे, इसलिए कहा जाता है कि बड़ी मीठी नींद थी। नींद में भी अन्तर होता है। हर संकल्प में हर कर्म में सदा सर्विस समाई हुई हो, इसको कहा जाता है निरन्तर सेवाधारी। बाप और सेवा। जैसे बाप अति प्यारा लगता है। बाप के बिना जीवन नहीं, ऐसे ही सेवा के बिना जीवन नहीं। ऐसे निरन्तर योगी और निरन्तर सेवाधारी विघ्न विनाशक होते हैं। बाप की याद और सेवा– यह डबल लॉक लग जाता है, इसलिए माया आ नहीं सकती। चेक करो कि सदा डबल लॉक रहता है? अगर सिंगल लॉक है तो माया के आने की मार्जिन रह जाती है, इसलिए बार-बार अटेन्शन दो कि बाप की याद और सेवा में तत्पर हैं? सदा यह याद रखो कि हर कर्मेन्द्रियों द्वारा बाप के याद की स्मृति दिलाने की सेवा करनी है। हर संकल्प द्वारा विश्व कल्याणकारी बन लाइट हाऊस का कर्तव्य करना है। हर सेकेण्ड की पावरफुल वृत्ति द्वारा चारों ओर पावरफुल वायब्रेशन फैलाने हैं अर्थात् वायुमण्डल परिवर्तित करना है। हर कर्म द्वारा हर आत्मा को कर्मयोगी भव का वरदान देना है। हर कदम में स्वयं प्रति पदमों की कमाई जमा करनी है। तो संकल्प, समय, वृत्ति और कर्म चारों को सेवा प्रति लगाओ, इसको कहा जाता है **निरन्तर सेवाधारी अर्थात् सर्विसएबुल।**

2] जैसे एयरकण्डीशन में सर्दी व गर्मी का अनुभव करते हैं कि सचमुच गर्मी से ठण्डी हवा में आ गये हैं। ठण्डी से गर्मी में आ गये हैं। ऐसे आपकी चलन और चेहरे द्वारा आपके संकल्प शक्ति द्वारा सुख-शान्ति और शक्ति का अनुभव करें।